اگست ۲۰۱۰ء

ماہنامہ شعاع عمل لکھنؤ

قَالَ اللّٰهُ تَبَارَكَ وَتَعَالىٰ قَدْ جَاءَكُمْ مِنَ اللّٰهِ نُورٌ وَكِتَابٌ مُبِينٌ

بے شک تمہارے پاس اللہ کی طرف سے نور آیا ہے اور روشن کتاب

المجتبیٰ

نور ہدایت فاؤنڈیشن، حسینیہ غفرانمآب، چوک، لکھنؤ-۳

R.N.I. No. UPBIL/2004/13526
Postel Regd.No. SSP/LW/NP-75/2008-10 Dispatch Date: 2 & 6 of Every Month

SHUA-E-AMAL
Lucknow

शुआ-ए-अमल
हिन्दी, उर्दू मासिक पत्रिका लखनऊ

AUGUST 2010

امامباڑہ میرزین العابدین، ہردوئی روڈ، چوک، لکھنؤ

NOOR-E-HIDAYAT FOUNDATION
Imambara Ghufran Maab, Chowk, Lucknow-3 (U.P.) INDIA, Phone : 2252230

वर्ष-7

R.N.I. No. UPBIL/2004/13526
Postal Regd No-SSP/LW/NP-75/2008-10
P.O. Chowk. Dispatch Date: 2 & 6 of every month

अंक-2

अगस्त - 2010

नूरे हिदायत फ़ाउण्डेशन की
हिन्दी, उर्दू मासिक पत्रिका

शुआ-ए-अमल

"लखनऊ"

संरक्षक
मौलाना सै. कल्बे जवाद नक़वी साहब

सम्पादक
सै. मुस्तफ़ा हुसैन नक़वी 'असीफ़' जायसी

सलाहकारी परिषद
प्रोफ़ेसर अल्लामा सै० अली मुहम्मद नक़वी, प्रोफ़ेसर सै० हुसैन कमालुद्दीन अकबर,
प्रोफ़ेसर सै० इमरान हैदर, मु० र० आबिद, सैय्यद समीउल हसन वसीम, तज़हीब नगरौरी

वार्षिक - 200 रु मिलने का पता क़ीमत - 20 रु

नूरे हिदायत फ़ाउण्डेशन
इमामबाड़ा हज़रत ग़ुफ़रानमआब मौलाना कल्बे हुसैन रोड
चौक लखनऊ - 3 (उ.प्र.) भारत। फोन न० 0522-2252230

सै. कल्बे जवाद नक़वी प्रिन्टर, पब्लिशर और प्रोपराइटर ने मासिक शुआ-ए-अमल (उर्दू, हिन्दी) निज़ामी आफ़सेट प्रेस विक्टोरिया स्ट्रीट लखनऊ से छपवाकर आफ़िस नूर-ए-हिदायत फ़ाउण्डेशन इमामबाड़ा ग़ुफ़रानमआब मौलाना कल्बे हुसैन रोड लखनऊ-3 से प्रकाशित किया। सम्पादक : सै० मुस्तफ़ा हुसैन नक़वी 'असीफ़ जाएसी'।

मजलिसे इदारत

- डॉ० अमानत हुसैन
- सै० सुफ़यान अहमद नदवी
- तज़हीब नगरौरी
- डॉ० आरिफ़ अब्बास
- मिर्ज़ा हुमायूँ क़दर

R.N.I. No.
UPBIL/2004/13526

Postal Regd. No.
SSP/LW/NP-75/2008-10

WEBSITE:
www.noorehidayatfoundation.com
www.al-ijtihaad.com

E_mail:
noorehidayat@yahoo.com
noorehidayat@gmail.com

ज़रे सालाना

1- यूरोप, अमरीका, कनाडा: 80 अमरीकी डालर
2- ख़लीजी मुमालिक: 60 अमरीकी डालर
3- एशिया, पाकिस्तान: 40 अमरीकी डालर
4- पाकिस्तान ज़मीनी डाक: 20 अमरीकी डालर

लाइफ़ मेम्बरशिप: 4000/-

फ़ेहरिस्ते मज़ामीन

अगस्त 2010ई० शाबानुल मुअज़्ज़म-रमज़ानुल मुबारक 1431हि०)

न० मज़मून व लेखक	पेज
1— इस्लाम दीने अमल है (क़िस्त-2) सैय्यिदुल उलमा सै० अली नक़ी नक़वी ताबा सराह	3
2— बरकत और रहमत की मुबारक रात अल्लामा सै० मुहम्मद रज़ी साहब क़िब्ला, कराची	9
3— इस्लाम में औरतों का दर्जा क़ाएदे मिल्लत मौलाना सै० कल्बे जवाद साहब क़िब्ला	10
4— मुख्य समाचार इदारा	15

इजाज़े

इदारे को आयतुल्लाह आक़ाए सैय्यद अली सीस्तानीम०ज० और दूसरे मराजे की जानिब से सहमे इमाम (खुमुस) लेने की इजाज़त हासिल हैं।

क़िस्त-2

इस्लाम दीने अमल है

आयतुल्लाहिलउज़्मा सैय्यिदुलउलमा सै० अली नक़ी नक़वी ताबा सराह

(पिछले अंक से आगे)

फ़राएज़े हज में भी सई की अहमियत ज़ाहिर है जिसका पस मन्ज़र ये है कि ख़लीले हक़ ने दूध पीते बच्चे को उसकी माँ के साथ बेआबो ग्याह मैदान में पहुँचा दिया। चलते वक़्त एक कूज़-ए-आब और दो चार रोटियाँ दे गए, वह कब तक चलें। ज़ाहिर है कि पहले माँ पर भूक और प्यास का ग़लबा हुआ मगर माँ ने उसको बर्दाश्त किया। उसके बाद एक वक़्त वह आया कि बच्चे की फ़ितरी ग़िज़ा का ख़ज़ाना ख़त्म हो गया। अब बच्चे पर भूक-प्यास का ग़लबा हुआ। जब माँ ने बच्चे को तड़पता देखा तो खड़ी हो गईं और सफ़ा मरवा दो पहाड़ियों पर गईं तलाशे आब के लिए। अब ख़याल हुआ कि बच्चा अकेला है तो दौड़कर बच्चे के पास आईं और फिर बच्चे का तड़पना देखा न गया तो दोबारा तलाशे आब के लिए पहाड़ी पर गईं। सात दफ़ा आईं और गईं। अक़्ल से पूछिये वह क़ादिरे मुतलक़ जो बाद में ज़मज़म को नमूदार कर सकता था क्या वह इस पर क़ादिर न था कि पहले ही जब ग़लबा-ए-अतश हुआ तो ज़मज़म नमूदार कर देता। लेकिन उसे तो ये सुन्नत क़ायम रखना थी कि पहले सई करो। फिर नतीजे का इन्तिज़ार करो। सई करो तो रहमते इलाही तुम्हारे शामिले हाल होगी।

अब क़यामत तक के लिए मुसलमानों को भी दोनों पहाड़ियों के दरमियान गर्दिश करना है और उसका नाम वही ''सई'' है।

ये सई क्या है? एक बीबी के अमल की शबीह है वरना हम जो सई करते हैं तो क्या हम तलाशे आब करते हैं? नहीं। मालूम हुआ कि असल मक़सद अमल का ताल्लुक़ साहेबे अमल से होता है और बाद में हमारा काम उसकी याद का क़ायम रखना होता है। सफ़ा मरवा वह दोनों पहाड़ियाँ जहाँ ये सई हुई थी शआरुल्लाह का जुज़ बन गईं। हालांकि जनाब हाजरा का सिर्फ़ क़दम मस हुआ था। उनके पाँव से ख़ून का क़तरा नहीं टपका था। फिर भी ये दोनों पहाड़ शआएरुल्लाह बन गए तो जिस ज़मीन में शहीदों का ख़ून जज़्ब हो गया हो, वह ज़मीन क्या शआरुल्लाह में दाख़िल नहीं होगी?

मनासिके हज में ज़्यादातर इब्राहीम[अ०] और इस्माईल[अ०] की यादगारें ही हैं इरशाद हुआ हैः

''इब्राहीम[अ०] के खड़े होने की जगह को अपनी नमाज़ का मक़ाम बनाओ।''

इसी बिना पर नमाज़े तवाफ़ मक़ामे इब्राहीम में पढ़ी जाती है। अब बताइये कि क्या इब्राहीम[अ०] का तसव्वुर इस नमाज़ में नहीं रहेगा?

जो मक़ासिदे इलाही में अपनी ज़िन्दगी सर्फ़ करते हैं, उनकी याद मरज़ि-ए-इलाही होती है।

मिना की क़ुर्बानी में हाजी कितना रुपया सर्फ़ करता है? मुसलमानों का इतना पैसा बिला वजह सर्फ़ होता है, मगर नहीं ये बिला वजह नहीं है। ख़ासाने इलाही की याद क़ायम करना ख़ुद इतना गराँक़द्र मक़सद है जिसके मुक़ाबले में मआशी पहलू कोई चीज़ नहीं है।

ये क़ुर्बानी क्या है? आख़िर इसमें दस ज़िलहिज्जा

की क्या ख़ुसूसियत है चूँकि आज से मुद्दतों पहले ये क़ुर्बानी हुई थी। लेहाज़ा इस दिन उस क़ुर्बानी को याद करो।

फिर अगर लफ़्ज़ी याद काफ़ी होती है तो क़ुर्बानि-ए-इब्राहीम^अ॰ की मुताल्लिक़ा आयतें पढ़ लेते मगर ख़ालिक़े फ़ितरत वाक़िफ़ है कि फ़ितरते इन्सानी में लफ़्ज़ी याद इतनी असर अन्दाज़ नहीं होती जितनी कोई मुजस्सम शक्ल में अमली सूरत, ये क़ुर्बानी शबीहे अमले ख़लील है। वह सई शबीहे मादरे इस्माईल थी फिर इन जानवरों को देखिये। ये किसकी शबीह हैं? ये शबीहे इस्माईल तो नहीं हैं क्योंकि इस्माईल का ज़िब्ह होना अमली तौर पर पाया-ए-तकमील को नहीं पहुँचा। वह रंज हुए नहीं बल्कि ये शबीह उस गोस्फ़न्द की है जो फ़िदया बन कर आया था। इसका मतलब ये है कि वह जानवर जो किसी वली-ए-खुदा के काम आए, उसकी भी यादगार मनाना ख़ालिक़ को पसन्द है। इसके बाद ज़ुलजनाह की शबीह पर किसी को मोतरिज़ न होना चाहिए।

फ़रीज़-ए-इस्लामी इन्सानी किसी क़ुर्बानी का भुलाना नहीं है। 10 ज़िलहिज्जा को फ़रज़न्दे ख़लील की क़ुर्बानी है और 10 मुहर्रम को फ़र्ज़न्दे हबीब हक़ की क़ुर्बानी।

जनाब इब्राहीम^अ॰ से हमारा एतेक़ादी रिश्ता है। अमली रिश्ता नहीं और अपने रसूल^स॰ से अमली रिश्ता भी है कि उनकी तालीमात पर हमें कारबन्द होना है तो फ़रज़न्दे ख़लील की क़ुर्बानी को याद रखने की ज़रूरत है और ख़ुद अपने रसूल की क़ुर्बानी याद रखने के क़ाबिल न होगी?

अब कोई कहे कि वह याद तो बतौरे ईद है। यहाँ ग़म क्यों किया जाता है मैं कहता हूँ कि ये नतीजे के फ़र्क़ की बिना पर है। रोज़े क़ुर्बानि-ए-इस्माईल रोज़े ईद है इसलिए कि दुम्बा आ गया और नबी ज़ादा बच गया मगर दस मुहर्रम को फ़रज़न्दे रसूल^स॰ ज़बह हो गया, इसलिए रोज़े ग़म है।

और ये तसव्वुर कि जो मरतब-ए-शहादत पर फ़ायज़ हुआ, उसे रोना नहीं चाहिए ग़लत हो गया। जनाब हमज़ा की मिसाल से कि जब आप शहीद हुए तो रसूल^स॰ की ख़्वाहिश के मुताबिक़ अन्सार की औरतें ख़ाना-ए-जनाब हमज़ा में आकर सफ़िया को पुरसा देकर गिरया करने लगीं और आवाज़ गिरया रसूल^स॰ तक पहुँची तो आपने दुआ के लिए हाथ उठाए, ऐ बीबियो अल्लाह तुम से राज़ी हो तुम्हारे शौहरों से राज़ी हो तुम्हारी औलाद से राज़ी हो। अब इन्साफ़ से देखिये पैग़म्बरे ख़ुदा^स॰ ने ख़वातीन अग़यार के गिरया की आवाज़ों पर हसरत से फ़रमाया थाः

मेरे चचा हमज़ा पर रोने वालियाँ नहीं हैं तो अगर रसूल^स॰ कर्बला में होते तो ये न फ़रमाते कि

मेरे फ़रज़न्द हुसैन^अ॰ पर रोने वाला कोई नहीं है और फिर ज़्यादा हसरतनाक बात ये है कि रोने वाले हों मगर रोने न दिया जाए।

इमाम हुसैन^अ॰ को रोने वाले मौजूद थे।

ज़ैनब, उम्मे कुल्सूम ऐसी बहनें, फ़ातिमा^स॰ सकीना ऐसी बेटियाँ लैला व रुबाब ऐसी बीवियाँ और सैय्यिदुस्साजिदीन ऐसे फ़रज़न्द मगर— मगर ये लोग रोने कहाँ पाए? जो रोने का ख़ास वक़्त था, उस वक़्त ख़ेमों में आग लगी हुई थी। बीबियों का आलम ये था कि एक ख़ेमे में आग लगती थी तो दूसरे ख़ेमे में चली जाती थीं। यहाँ तक कि आग के शोलों में सब ख़ेमे घिर गए मगर अब भी घबरा के क़दम बाहर नहीं निकलते। सिमट-सिमट कर सानि-ए-ज़हरा हज़रत ज़ैनब के पास आईं कि आप जानशीने फ़ातिमा हैं, बताईये हर तरफ़ आग के शोले बलन्द हैं क्या करें?

हज़रत ज़ैनब, यक़ीनन मसल-ए-शरई से वाक़िफ़ थीं मगर फ़रीज़-ए-हिजाब की अहमियत दिखाना थी कि फ़रमाती हैं बीबियो! मुझ से क्यों पूछती हो? ख़ुदा इमामे वक़्त को ज़िन्दा रखे बग़ैर इस से पूछे मैं क्या जवाब दूँ? आईं अब सैय्यद सज्जाद के पास..... देखिये ये इम्तिहान कैसा सख़्त है? हमारे चौथे इमाम से बाप के बाद बहैसियते इमाम मसला क्या पूछा जाता है? वह ये है कि फूफी सरहाने खड़ी हैं, कहती हैं, बेटा देखो चारों तरफ़ ख़ेमों में आग के शोले बलन्द हैं। अब तुम इमामे वक़्त हो, बताओ हुक्मे ख़ुदा इस वक़्त क्या है। जल कर

मर जाएं या ख़ेमों से बाहर निकलें और अब सैय्यदे सज्जाद को कहना पड़ता है कि अब ख़ेमों से बाहर निकलिये और वह बीबियाँ जिनकी माँ का जनाज़ा रात को उठा था, ख़ेमों से रोज़े रौशन में बाहर आती हैं इस तरह कि ''अपने मुँह पर तमांचे मारती हुई बाल सरों से बिखराए हुए''।

(2)

दूसरा शोबा आख़िरत की कामयाबी के लिए अमल। अब दुनिया के मक़ासिद के लिए कोई ज़ाहिद कह सकता था कि हमें माल की ज़रूरत नहीं। दुनिया की कामयाबी ज़रूरत नहीं मगर क्या कोई मोमिन ऐसा है जो कहे मुझे जन्नत की ज़रूरत नहीं या नजाते आख़िरत की ज़रूरत नहीं। ये तो वही कहेगा जो आख़िरत का क़ायल न हो तो जन्नत और कम अज़ कम नजात हर फ़र्दे मुसलिम का नस्बुल ऐन है। मगर तसव्वुर यही है कि हमें कुछ करना न पड़े। नतीजा बेहतर से बेहतर हासिल हो और सई का सवाल पैदा न हो। मगर मैं पूरे मुताल-ए-क़ुरआन के सहारे से अर्ज़ कर रहा हूँ कि क़ुरआन में आख़िरत की नवेद हर जगह अमल पर दी गई है और जिन-जिन मुख़्तलिफ़ अलफ़ाज़ से इस मक़सद को नुमायाँ किया गया है, उन पर अगर किताब लिखी जाए तो हर क़िस्म की आयात को अलाहेदा-अलाहेदा तफ़सील के साथ पेश किया जा सकता है। मसलन ये आयत जो मेरा सरनाम-ए-कलाम है कि ''आख़िरत में तमाम लोग निकलेंगे, गिरोह दर गिरोह ताकि उनके आमाल उनको दिखाये जाएं तो जो ज़र्रा बराबर भी अमले ख़ैर करेगा, वह उसे देख लेगा वह जो ज़र्रा बराबर भी अमले शर करेगा उसे देख लेगा।'' यह एक बाब की नुमाइन्दा है जो अमल के उनवान से है दूसरी सिन्फ़ उन आयात की है जो सई के उनवान से हैः मसलन-

जो आख़िरत को पेशे नज़र रखे और उसकी ख़ातिर वह सई भी करे जो उसके लिए दरकार है दर हालांकि वह मोमिन हो तो उस की सई की नाक़दरी नहीं होगी।

बाज़ आयात में मोहसिन की लफ़्ज़ आई है। क़ुरआन हुस्ने अमल को एहसान कहता है ये यहूद व नसारा का तसव्वुर था कि जमाअती तौर पर हम नजात और दाख़ल-ए-जन्नत के हक़दार हैं।

''उनका क़ौल है कि जन्नत में हरगिज़ कोई दाख़िल नहीं होगा, सिवा इसके जो यहूदी हो (यह यहूदी कहते हैं) या ईसाई हो (ये नसारा का क़ौल है)।

हमारी आम ज़हनियत के मुताबिक़ इसके जवाब में ये कहा जाता है कि वाह मुसलमानों के सिवा कोई जन्नत में नहीं जा सकता।

मगर ये जवाब ही क्या था, जो दावे से टकराव न होता जैसे वह उनका नारा था वैसे उनके मुक़ाबले में मुसलमानों का ये नारा हो जाता।

क़ुरआन कहता है उनके जवाब में ये कहो कि अगर तुम सच्चे हो तो अपनी दलील पेश करो। अब इससे ये उसूल क़ायम हो गया कि बग़ैर दलील के किसी का दावा क़ुबूल नहीं हो सकता।

उन्होंने कहा था सिवा यहूद व नसारा के कोई जन्नत में नहीं जायेगा। इरशाद होता है क्यों नहीं? मगर अब ये नहीं कहा जाता कि मुसलमान यक़ीनन जन्नत में जायेंगे। अगर ये मुसलमान कहा जाता तो वह एक जमाअत का लक़ब क़रार पा जाता लेहाज़ा मुसलमान नहीं कहा जाता बल्कि कहा जाता है कि जो अपने चेहरे को बिल्कुल अल्लाह की तरफ मोड़ दे यानी जो मुस्लिम बताया जा रहा है।

''और उसके साथ हुस्ने अमल रखता हो'' तो उसके लिए उसका अज्र है। यहाँ ये नहीं कहा जाता कि उनके लिए बड़ा अज्र है। या ये कि अज्र है, जिससे समझा जाता कि हर मुस्लिम के लिए जो नेक अमल हो, एक मुअय्यन अज्र है जो यक्साँ तौर पर मिलेगा। बल्कि ''लहुम अज्रुहुम'' उनके लिए उनका अज्र है। क्या मतलब? यानी जितना हुस्ने अमल अमल हुआ उतने अज्र का हक़ है। और अन्जाम में न उनके लिए ख़ौफ़ है, न उनके लिए एक जगह है।

''खुदा नहीं बर्बाद करता अज्र को उसके जो अपने आमाल को दुरुस्त रखे।''

ऐसी ही कितनी आयतें क़ुरआन की हैं जिनमें

अमल की अहमियत दिखाई गई है।

सबका ख़ुलासा ये है कि "इस्लाम दीने अमल है। अब कितनी इबरत की बात है कि जिस क़ौम की बुनियादी किताब में इतना अमल पर ज़ोर दिया गया हो, उस क़ौम में यह तसव्वुर पैदा हो जाए कि आमाल की ज़रूरत नहीं है।

अगर मुसलमानों के अन्दर कोई ख़ास जमाअत ऐसी हो कि वह नजात को अपना ख़ुसूसी हक़ समझ ले कि सिर्फ़ हम नजात के हक़दार हैं तो देखना होगा कि मुसमलमानों में उस जमाअत का ख़ास इम्तियाज़ क्या है?

तौहीद मुश्तरक, नुबुव्वत मुश्तरक, क़यामत मुश्तरक, फ़िरक-ए-नाजिया का इम्तियाज़ सिर्फ़ अद्ल और इमामत से है। और इसी लिए हम अपने को इमामिया कहते हैं। अब इस जमाअत के कुछ अफ़राद को ख़याल हो कि हमें अमल की ज़रूरत नहीं। मैं कहता हूँ कि इमामत के ख़याल का तो लाज़मी नतीजा है पैरवी, और ये नुबुव्व, रिसालत और इमामत इन सब के लुग़वी माने से ज़ाहिर है। नुबुव्वत व रिसालत जिसका हामिल नबी और रसूल होता है, इन लफ़्ज़ों का बराहे रास्त तक़ाज़ा वुजूबे इताअत नहीं है। इन दोनों मन्सबों के अलावा इमामत है जिसका हामिल इमाम होता है। ये हमारा ख़बरी अमीन है। अब तीनों के लुग़वी माने मुलाहेज़ा हों।

नबी के माने हैं ख़बर देने वाला तो दूसरों का काम क्या है। तस्दीक़ करना। रिसालत के माने पैग़ाम पहुँचाना तो दूसरों का काम है पैग़ाम को क़ुबूल करना। लेकिन इमाम के माने हैं। आगे-आगे चलने वाला तो दूसरों का काम क्या है? पीछे-पीछे चलना। अब इस से एक और पहलू पर तवज्जो फ़रमाइये। नबी के माने ख़बर देने वाला तो नबी की ज़रूरत उस वक़्त तक कि जब तक कोई एक ख़बर भी पहुँचाना बाक़ी है। रसूल का काम पैग़ाम पहुँचाना, तो जब तक कोई पैग़ाम पहुँचाना बाक़ी है उस वक़्त तक ये काम है और जब ये आख़िरी पैग़ाम पहुँचा दिया और तकमीले दीन हो गई तो अब रसूल की ज़रूरत नहीं लेकिन इमाम के माने हैं आगे-आगे चलने वाला तो जब तक रास्ता बाक़ी है और चलने वाले मौजूद हैं, तब तक रहनुमाई बाक़ी रहना ज़रूरी है।

थोड़ी देर के लिए नमाज़ में इमामे जमाअत होता है तो उसकी पैरवी इतनी ज़रूरी है कि रुकु रुक्ने नमाज़ है। पसन्द-ए-ख़ुदा है मगर इमाम से पहले हो गया तो बातिल। सजदा महबूब तरीन अमल है मगर इमाम से पहले हो गया तो बातिल। अब इन्साफ़ कीजिए कि इमामे जमाअत की मुताबेअत ज़रूरी हो और जो दीन और दुनिया का कुल्लियतन इमाम हो उसके अहकाम की ख़िलाफ़वर्जी की जाए और अफ़आल की मुताबेअत न हो। क्या सिर्फ़ बारह इमाम के नाम सुना देना ही काफ़ी है और उनकी रहनुमाई और मिसाली सीरत से कोई बहस नहीं। मगर ये अफ़सोसनाक हक़ीक़त है कि मुसलमानों में बिला तफ़रीक़े फ़िरक़ा ये बात हो गई है कि अमल से जान बचाते हैं। पहले तमाम मुसलमानों ने अपने को उम्मते मरहूमा कह दिया मगर इसकी कोई दलील होना चाहिए। आख़िर क्या ख़ुसूसियत है कि जो पूरी की पूरी उम्मत मरहूमा हो जाए। इसकी दलील ये कही जा सकती है कि चूँकि हम रहमतुल लिलआलमीन से वाबस्ता हैं इसलिए रहमते इलाही हमारे शामिले हाल है। लेकिन अगर ख़ुदा नख़्वास्ता हमारा रास्ता रहमतुल लिलआलमीन के रास्ते से अलग हो गया तो बताइये रहमते इलाही इधर आयेगी या उधर जायेगी?

फिर उम्मत होना तो एक रिश्ता है हम रसूल[स०] से रिश्ता बता रहे हैं मगर रसूल भी तो हमें अपनी उम्मत में समझें। क़ुरआन मजीद में एक रसूल की ज़बानी एलान है:-

"जो मेरी पैरवी करे, वह मुझ से ताल्लुक़ रखता है।"

इसके माने ये हैं कि जो पैरवी नहीं करता वह रसूल से ताल्लुक़ नहीं रखता तो उम्मते रसूल होना कैसा? फिर इसके बाद रसूल अपनी उम्मत फ़रमा भी दें, अल्लाह भी रसूल[स०] की उम्मत में जाने। कोई कहे ये क्योंकर हो सकता है कि रसूल अपनी उम्मत कहें और अल्लाह क़ुबूल न करे? मैं कहता हूँ कि हज़रत

नूह[अ०] भी तो रसूल थे, वह कह रहे थे ''मेरा बेटा मेरे अहल में से है'' ख़ालिक़ पे पहली निस्बत की नफ़ी नहीं फ़रमाई। जवाब में ये नहीं कहा कि वह तुम्हारा बेटा नहीं है मगर दूसरी निस्बत के लिए कहा जाता है। ''वह तुम्हारे अहल से नहीं है'', ''उसके आमाल अच्छे नहीं हैं''। मालूम हुआ कि आमाल वह हैं कि बेटा अहल से ख़ारिज हो जाता है। उम्मत होना क्या चीज़ है। अब जिस पैग़म्बरे ख़ातम की ज़बान से नूह[अ०] का वाक़िआ हम तक पहुँचा है, वह अगर चादर खींच कर कभी कुछ अफ़राद के लिए कह दे।

''परवरदिगार! ये मेरे अहल हैं'' तो अब दुनिया नसबी रिश्ते न देखे कि ये दामाद हैं, वह बेटी हैं, वह नवासे हैं बल्कि महसूस करे कि इनका किरदार इतनी बलन्दी पर है कि पैग़म्बर अपने पैग़म्बराना ज़मीर के इस्तेहकाम के साथ ख़ुद अल्लाह से मुख़ातब होकर कह रहे हैं कि ये मेरे अहल हैं।

बहरहाल ये तो तमाम मुसलमानों की बात थी कि उन्होंने एक जमाअत की हैसियत से अपने को उम्मते मरहूमा क़रार दिया। अब उम्मत के एक गिरोह का ज़िक्र है जिसने अपना लक़ब क़रार दिया ''फ़िरक़्-ए-नाजिया'', ''नाजिया'' से मतलब नजात पाने वाले। वह क़ुरआनी मुतालबा कि अपनी दलील पेश करो, उनकी तरफ़ भी मुतवज्जह है मगर ख़ुदा का शुक्र है फ़िरक़्-ए-नाजिया की एक फ़र्द होते हुए मैं इसकी दलील पेश कर सकता हूँ:

ये हदीस मुत्तफ़क़ अलैह है कि रसूल[स०] ने फ़रमाया:

''मेरी उम्मत के तिहत्तर फ़िरक़े होंगे जिनमें सब दोज़ख़ की आग में होंगे, सिवा एक फ़िरक़े के''

इस से समझ में आया कि तिजारत के लिए उम्मत में काफ़ी नहीं है। इस फ़िरक़े में होना ज़रूरी है। अब पैग़म्बर ही ने पहचान भी नाजी फ़िरक़े की बताई है। वरना पैग़म्बरे ख़ुदा पर हर्फ़ आता कि नजात के हक़दार की निशानी न बताई। तिहत्तर रास्तों में हम कैसे सही रास्ते की पहचान करें जो मंज़िल तक पहुँचाए। अगर पैग़म्बर[स०] न बताते तो मुसलमान का फ़रीज़ा था कि रसूल का दामन थाम कर पूछें कि उस फ़िरक़े की पहचान तो बता दीजिऐ। इससे मालूम होता है कि पैग़म्बर ने बताया, अगर बताया न होता तो अस्हाब पूछते क्यों न? बेशक बताया और इन अलफ़ाज़ में बताया कि:

''मेरे अहलेबैत[अ०] की मिसाल नूह की कश्ती की सी है जो इस पर सवार हुआ, उसने नजात पाई और जो पीछे रह गया वह डूबा और गया।'' पीछे रहने के क्या माने हैं? कश्ती पर नहीं बैठा या बैठ कर रास्ते में किसी मंज़िल पर उतर गया वह फ़िरक़ा जो अहलेबैत की कश्ती में सवार हुआ है, वह नाजी है।

अब सवाल ये है कि अहलेबैत की कश्ती पर बैठने का मतलब क्या है? ज़ाहिर है कि ये इस्तेआरा है। इस्तेआरे की बुनियाद तश्बीह पर होती है। कोई एक बात मुश्तबा और मुश्ब्बह में मुश्तरक होती है, वह वजहे जामेआ कहलाती है। अब ये देखना है कि कश्ती पर बैठने में क्या होता है?

इस सवाल का मफ़हूम उन सवालात और उन जवाबात से वाज़ेह होगा आप साहिल पर खड़े हैं और कश्ती दरिया में है साहिल पर से आप कश्ती की तारीफ़ करें कि बहुत ख़ूबसूरत कश्ती है, तो ये क्या कश्ती पर बैठना है? जवाब इसका ये है कि नहीं, ये कश्ती पर बैठना नहीं है।

अब दूसरी बात, साहिल पर खड़े ही खड़े कहने लगें कि हम इस कश्ती को बहुत चाहते हैं और मुहब्बत का दावा सही भी हो, क्योंकि अगर वह कश्ती क़ाबिले मुहब्बत है तो उस से मुहब्बत होना चाहिए। ये कोई आपका कारनामा नहीं है ये उसके हुस्न का तक़ाज़ा है मगर मुहब्बत साहिल पर खड़े-खड़े कश्ती पर बैठना तो नहीं है। अब इसके बाद नाज़ुक तर मंज़िल है कि साहिल पर खड़े हैं और कश्ती भंवर में पड़ गई। बादे मुख़ालिफ़ के थपेड़े पड़ने लगे और आप उसकी बर्बादी पर आँसू बहाने लगे। ये आँसू भी बेक़ीमत नहीं हैं। दर्दे दिल की दलील हैं। मुहब्बत का सुबूत हैं मगर वह बात अपनी जगह पर क़ायम है कि साहिल पर खड़े-खड़े ये आँसू बहाना भी कश्ती पर बैठना नहीं है। फिर कश्ती

पर बैठने में क्या होता है?

मेरी तो समझ में यही आता है कि कश्ती पर जा के बैठ गए तो न हमारी ज़ाती हरकत कुछ है, न ज़ाती सुकून, कश्ती चली तो हम चले, कश्ती रुकी तो हम रुके। बस अब अहलेबैत की कश्ती पर बैठने के माने समझ में आ गये। वह ये हैं कि अपनी हरकत और सुकून को अहलेबैत के ताबे बना दो जहाँ अहलेबैत ने क़दम आगे बढ़ाए हों वहाँ क़दम आगे बढ़ाओ जहाँ तक गए हों वहाँ क़दम रोक लो तो ये है अहलेबैत की कश्ती पर बैठना। इस सूरत में जहाँ कश्ती पहुँचेगी वहाँ हम पहुँचेंगे इसलिए मासूम ने इरशाद फ़रमाया हैः-

''हमारे पैरो हमारे दर्जे में होंगे क़यामत के दिन।''

आज कहा जाता है कि जब हम अहलेबैत के चाहने वाले और मोमिन हैं तो हमें इबादत और इताअत की क्या ज़रूरत है?

हालांकि मंज़िले मुहब्बत व ईमान में हम बुरैर हमदानी या हबीब इब्ने मज़ाहिर या मुस्लिम बिन औसजा के बराबर हरगिज़ नहीं हैं। कर्बला में तो फ़राएज़े इन्सानी के तमाम शोबों को ज़िन्दा रखा गया, चुनानचे नमाज़ जैसी कर्बला में पढ़ी गई वैसी कभी नहीं पढ़ी गई। देखिये! ग़ैर मासूमीन का ज़ौक़े इबादत भी कर्बला में कितना बुलन्द था। जंगे सिफ़्फ़ीन में हज़रत अली इब्ने अबी तालिब नमाज़ पढ़ रहे हैं और तीर इधर-उधर आकर गिर रहे हैं तो जनाबे अब्बास ने कहा कि ये नमाज़ का मौक़ा है? हज़रत अली[अ०] ने कहा कि ऐ इब्ने अब्बास! इसी नमाज़ के लिए के लिए तो हम जंग कर रहे हैं।

यहाँ इमाम का अमल सामने है। फिर भी जनाब इब्ने अब्बास हैरत से सवाल कर रहे हैं। अब ज़रा अबू सुमामा साएदी का ज़ौक़ इबादत देखिये कि तीरों की बारिश है, हंगामे जंग और इधर निगाह आफ़ताब पर है फ़िक्र है कि इमाम न कहने पाएं और हम अपने ज़ौक़े इबादत का नज़राना इमाम की ख़िदमत में पेश कर दें। कहते हैं कि मौला! तमन्ना ये है कि ये नमाज़ आपके साथ बजमाअत अदा हो जाए। अबूसुमामा के कहने पर दुआएं देते हैं जैसे उस्ताद शागिर्द से मुकम्मल जवाब पर खुश होकर दुआएं देः

''तुम ने खुद से नमाज़ को याद किया। अल्लाह तुम्हारा शुमार नमाज़ियों और याद रखने वालों में करे।

हाँ-हाँ ये अव्वल वक़्ते नमाज़ है। ये है निगाहे ग़ैरे मासूम की इस्मत जिसकी सनद इमाम दे रहे हैं।

ज़ोहर की नमाज़ किस तरह हुई। सईद और ज़ुहैर सामने खड़े हैं। तीर आते हैं अपने ऊपर रोक कर नमाज़ मुकम्मल कराते हैं। ये दो क़ुर्बानियाँ सिर्फ़ नमाज़ के लिए थीं। इधर नमाज़ हो रही है उधर तीर खाए जा रहे हैं। किसी को ये समझने का हक़ नहीं कि उन्होंने नहीं पढ़ी, कौन कह सकता है कि तीर खाने के लिए झुके तो रुकु नहीं किया और सीधे हुए तो क़याम नहीं किया और इशारों से सजदे नहीं कर लिये। हा उस जमाअत में शरीक नहीं थे। उनका भी वही ज़ौक़े इबादत था जो अबुसुमामा का था, मगर इताअत व हिफ़ाज़ते इमाम मुक़द्दम थी और अब ये फैसला कोई नहीं कर सकता, कि उनकी नमाज़ अफ़ज़ल है जो मौला के पीछे नमाज़ पढ़ रहे थे या उनकी जो इमाम के आगे खड़े नमाज़ पढ़ने के साथ-साथ इमाम को नमाज़ पढ़वा रहे थे।

इधर इमाम ने सलाम फेरा और सईद ज़मीन पर गिरे और कहाः

''मौला! क्या मैंने वफ़ा का हक़ अदा कर दिया?''

फ़रमायाः हाँ तुम ने वफ़ा का हक़ अदा कर दिया। अल्लाह तुम्हें बेहतरीन बदला अता फ़रमाए।

ये नमाज़े ज़ोहर का ज़िक्र था बहुत मुमकिन है कि उसी वक़्त नमाज़े अस्र भी जमाअत से अदा हुई हो क्योंकि सफ़र और ख़ौफ़ में बइजमाए उम्मत जम-ए-बइनुस्सलातैन दुरुस्त है। हज़रत के लिए उस वक़्त दोनों बातें जमा थीं। मगर हमारे रहनुमायाने दीन और मासूमीन बिला शुबह औक़ाते फ़ज़ीलत पर अलग-अलग नमाज़ पढ़ने के पाबन्द थे चुनानचे कुतुबे मक़ातिल बताते हैं कि हज़रत इमाम हुसैन[अ०] ने इसके बाद आख़िरी लमह-ए-हयात में नमाज़े अस्र अदा की। मगर उस नमाज़ की पूरी कैफ़ियत बयान करने से मेरी ज़बान क़ासिर है। **(बक़िया पेज.....14 पर)**

बरकत और रहमत की मुबारक रात

अल्लामा सै० मुहम्मद रज़ी साहब क़िब्ला, कराची पाकिस्तान

"बेशक हम ने इस कुरआन को शबे क़द्र में नाज़िल किया है और ऐ सुनने वालो तुम्हें क्या मालूम कि शबे क़द्र क्या है। शबे क़द्र हज़ार महीनों से बेहतर है।"
(सूर-ए-क़द्र)

रमज़ान के इस अज़ीम और बाबरकत महीने की बहुत सी खुसूसियतों में से दो ऐसी बुनियादी खुसूसियतें हैं जो लैलो नहार की गर्दिश के किसी हिस्से को हासिल नहीं। एक ये कि रोज़ों के ज़रिये से इस माहे मुबारक में तज़किय-ए-नफ़्स और ततहीरे रूह का वह निज़ाम मुक़र्रर किया गया है जो ईमान और ताअते खुदावन्दी की सबसे बड़ी बुनियाद है और इस माह के शबो रोज़ इख़्लास व अबदियत का वह तसव्वुर पेश करते हैं जो किसी और महीने में मुमकिन नहीं। दूसरी बुनियादी और अहम तरीन खुसूसियत ये है कि इसमें कुरआने हकीम का नुजूल हुआ और ये नुजूल इस मुबारक शब में हुआ जिसे "लैइलतुल क़द्र" के मुक़द्दस नाम से पुकारा जाता है। शबे क़द्र के तअय्युन में मुफ़स्सिरीन के दरमियान इख़्तेलाफ़ पाया जाता है। मगर इतनी बात ज़रूर तैशुदा मालूम होती है कि ये बाबरकत शब रमज़ान ही के महीने में है। क्योंकि सूरए बक़रा आयत-185 में अल्लाह ने उसे साफ़ तौर पर बता दिया है कि नुज़ूले कुरआन माहे रमज़ान ही में हुआ था। इन लफ़्ज़ों के साथ "रमज़ान ही वह महीना है जिसमें कुरआन उतारा गया"। इसका साफ़ मतलब यही है कि शबे क़द्र इसी माहे मुबारक में है। अब इसके बाद ज़्यादातर रिवायात से यही बात मालूम होती है कि ये मुबारक शब रमज़ान के आख़िरी अशरे की ताक़ रातों में से कोई एक रात है। मगर अक्सर रिवायात में तेईसवीं और सत्ताईसवीं शब के मुताल्लिक़ खुसूसियत के साथ ज़्यादा ताकीद फ़रमाई गई है। इस अद्मे इज़हार और इस इख़्फ़ा की एक वजह ये भी मालूम होती है कि अहले ईमान इस शब की तलाश में कई रातों में इबादत करें और उन्हें इस तरह बहुत सवाब हासिल हो। ग़रज़ सत्ताईसवीं रमज़ान के मुताल्लिक़ सब का ज़्यादा रुजहान है कि यही शबे क़द्र है। शबे क़द्र की फ़ज़ीलत के लिए अल्लाह का ये एलान काफ़ी है कि वह एक हज़ार महीनों से अफ़ज़ल है (जिनमें कोई शबे क़द्र न हो) ये मुबारक रात क़यामत तक हर साल आती रहेगी। यही वह शब है जिसकी तारीकी के पर्दे में इलाही नूर की वह रौशनी हमें मिल गई जिसने हमें एक ऐसे निज़ामे ज़िन्दगी से पहचनवाया जो इन्सानियत की कामयाबी के लिए अब आख़िरी और हमेशा की ज़मानत है यानी "कुरआने हकीम" नुजूले कुरआन इसी शब में (हज़रत इब्ने अब्बास[रज़ि०] की हदीस के मुताबिक़) लौहे महफ़ूज़ से आसमाने अव्वल की तरफ़ नाज़िल हुआ था और फिर धीरे-धीरे तक़रीबन बाईस साल में तंजील लफ़्ज़ी की सूरत में हज़रत रूहुल अमीन के तवस्सुत से हुज़ूर अनवर सल-लल्लाहु अलैहि व आलिहि वसल्लम पर उतरता रहा। हमें चाहिए कि जिस क़दर भी मुमकिन हो हम शबे क़द्र में इबादत करने की सई व कोशिश करें और इस कोशिश से भी बहुत ज़्यादा खुद कुरआने करीम को पढ़ने और समझने और उसकी हिदायतों पर अमल करने की कोशिश करें जिसके नुजूल की वजह से शबे क़द्र शबे क़द्र बन गई। यक़ीनन ये बात कितनी अफ़सोसनाक होगी! अगर हम इस शब की तो बेहद इज़्ज़त करें मगर कुरआनी हिदायात पर अमल करने में कोताही से काम लें।

इस्लाम में औरतों का दर्जा

क़िस्त-2

क़ाएदे मिल्लत मौलाना सै० कल्बे जवाद नक़वी, जनरल सेक्रेट्री मजलिस उलमा-ए-हिन्द

(4)

अब तक की गुफ़्तगू का खुलासा ये है कि नाम नेहाद तरक़्क़ी याफ़्ता समाज के तमाम दावों के बावजूद औरत आज तक अपने हक़ीक़ी मक़ामो मंज़िलत से महरूम है, बल्कि आइन्दा भी महरूम रहेगी। इसका बुनियादी सबब ये है कि औरतों पर वह फ़राएज़ लादे जा रहे हैं जो उसकी फितरी तबीअत और ख़िलक़त के ख़िलाफ़ हैं। जब तक ख़वातीन की फ़ितरत और तबीअत और उनकी जिस्मानी और रूहानी खुसूसियात की पहचान न हो, उस वक़्त तक उनके फ़राएज़ और हुकूक़ को तय नहीं किया जा सकता। अल्लाह तआला ख़ालिक़े इन्सान है वह इन्सान की रग-रग से वाक़िफ़ है, चाहे वह मर्द हो या औरत। एक इन्सान अपनी फ़ितरी ज़रूरियात की पहचान में धोका खा सकता है, लेकिन ख़ालिक़ की निगाह से कोई चीज़ पोशीदा नहीं रह सकती।

इस्लाम आलमे बशरियत के लिए एक मुकम्मल तरीन क़ानून है, चूँकि ये क़ानून उसका बनाया हुआ है जो आरतों और मर्दों का ख़ालिक़ है। लेहाज़ा उसने जो हुकूक़ अता फ़रमाए हैं और जो फ़राएज़ मुअय्यन किये हैं, वह दोनों की फ़ितरी, जिस्मानी और रूहानी खुसूसियात व ज़रूरियात के हिसाब से हैं। ख़वातीन से मुताल्लिक़ इस पूरी गुफ़्तगू का सब से अहम पहलू यही है जिस पर इन्शाअल्लाह आइन्दा रौशनी डाली जायेगी। आज मैं चाहता हूँ कि इस पहलू पर गुफ़्तगू हो कि खुद यहूदियों और ईसाईयों की मज़हबी किताबों में ख़वातीन के सिलसिले में क्या कहा गया है और उनको किस दर्जे पर रखा गया है।

हमारी मुक़द्दस इलाही किताब क़ुरआन मजीद पर ईसाईयों और यहूदियों की जानिब से बराबर एतेराज़ात किये जाते रहे हैं। ख़ास तौर से ख़वातीन के मसाएल के सिलसिले में तो एतेराज़ात और इल्ज़ामात की बौछार है। कुछ अरसा पहले बंगलादेश की एक औरत तस्लीमा नसरीन ने जब इस्लाम के ख़िलाफ़ नाज़ेबा बातें शुरु कीं और जुराअत करके यहाँ तक कह दिया कि क़ुरआन की क़वानीन पुराने हो चुके हैं, उन्हें तबदील होना चाहिए तो ईसाईयों और यहूदियों ने उसका ज़बरदस्त इस्तेक़बाल किया।

तस्लीमा नसरीन का अदब में कोई मक़ाम नहीं। उसकी तहरीरें अदबी लेहाज़ से तीसरे दर्जे से भी कमतर हैं, मगर यही थर्ड क्लास मुसन्निफ़ा जब आस्ट्रिया पहुँची तो वहाँ के वज़ीरे आज़म ने तमाम प्रोटोकोल्स (Protocols) को तोड़ते हुए हवाई अड्डे पर आकर उसका इस्तेक़बाल किया, सिर्फ़ इस वजह से कि वह इस्लाम के ख़िलाफ़ लिख और बोल रही है। ईसाई और यहूदी नुमाइन्दे इस बात को भूल जाते हैं कि खुद उनकी मज़हबी किताबों में ख़वातीन उन तमाम हुकूक़ से महरूम हैं जो इस्लाम ने अता किये हैं (इस बात पर ध्यान रहे कि जो किताबें वह तौरेत और इन्जील के तौर पर पेश करते हैं ये वह असल किताबें नहीं हैं जो अम्बिया पर नाज़िल हुई थीं) बल्कि मैं समझता हूँ कि इस्लाम के ख़िलाफ़ ये तूफ़ान उठाया ही इसलिए गया है

कि ख़ुद उनकी मज़हबी किताबों की तरफ़ से तवज्जो हट जाए।

यहूदियों की मुक़द्दस किताब तौरेत जिसको अहदनाम-ए-क़दीम भी कहा जाता है, दरअस्ल 39 किताबों पर मुशतमिल है। इनमें ज़्यादा तर सहीफ़े हैं जो मुख़तलिफ़ अम्बिया की तरफ़ मन्सूब हैं। अगरचे ये इन्तेसाबात तहक़ीक़ की कसौटी पर पूरे नहीं उतरते हैं। इससे पहले ज़िक्र हो चुका है कि क़ुरआन करीम की तरफ़ ये बात मन्सूब की जाती है कि हज़रत हव्वा हज़रत आदम की बाईं पसली से पैदा हुईं। हक़ीक़त में ये बात तौरेत में दर्ज है। आज इसका हवाला दिया जा रहा है। तर्जुमाः ''और ख़ुदावन्दे ख़ुदा ने ज़मीन की मिट्टी से इन्सान को बनाया और उसके नथनों में ज़िन्दगी का दम फूँका तो इन्सान जीती जान हुआ'' (सफ़रे पैदाइश, बाबः 2 आयतः 7) हज़रत आदम[अ०] की ख़िलक़त के बाद तौरेत के मुताबिक़। तर्जुमाः ''और ख़ुदावन्दे ख़ुदा ने फ़रमायाः आदम का अकेला रहना अच्छा नहीं है। मैं इसके लिए मददगार उसके जैसा बनाऊँगा और ख़ुदावन्दे ख़ुदा ने कुल दश्ती जानवर और हवा के कुल परिन्दे मिट्टी से बनाए..... मगर आदम के लिए मददगार कोई उसके जैसा न मिला और ख़ुदावन्दे ख़ुदा ने आदम पर गहरी नींद भेजी और वह सो गया और उसने उसकी पस्लियों में एक को निकाल लिया और उसकी जगह गोश्त भर दिया। ख़ुदावन्दे ख़ुदा ने उस पस्ली से जो उसने आदम[अ०] में से निकाली थी एक औरत बनाकर उसे आदम के सामने लाया और आदम ने कहा ये तो मेरी हड्डियों में से एक हड्डी और मेरे गोश्त में से गोश्त है। इसलिए वह नारी कहलाएगी क्यों ये नर से निकाली गई है। इस वास्ते मर्द अपने माँ-बाप को छोड़ गया और अपनी बीवी से मिला रहेगा।'' (सफ़रे पैदाइश, बाबः 2, आयातः 18-25, तौरेत की मौजूदा और आइन्दा तमाम आयात के तर्जुमेः ''किताबे मुक़द्दस, बाइबिल सोसाइटी हिन्द, बैंगलौर'' से लफ़्ज़ बलफ़्ज़ लिये गये हैं)। पहले बयान हो चुका कि क़ुरआन मजीद में ऐसा कोई तज़किरा नहीं और ये किताबे इलाही पर इत्तेहाम है और तौरेत में औरत की ख़िलक़त के सिलसिले में जो तौहीद और तहक़ीर का पहलू है उसका कोई शाइबा भी क़ुरआन मजीद में मौजूद नहीं है।

अगरचे इससे पहले इन मौज़ूआत पर मुख़्तसर बात हो चुकी है, लेहाज़ा यहाँ पर क़ारेईन की दिलचस्पी के लिए सिर्फ़ हवाले दिये जा रहे हैं ताकि दुनिया को मालूम तो हो कि इल्ज़ाम लगाने वाले हक़ीक़त में ख़ुद भी मुजरिम हैं और ख़वातीन की तहक़ीर क़ुरआन मजीद में नहीं, बल्कि ख़ुद उन्हीं की तहरीफ़शुदा मज़हबी किताबों में मौजूद है। अब रहा ये इल्ज़ाम कि हज़रत हव्वा ने हज़रत आदम को ममनूआ दरख़्त का फल खाने पर मजबूर किया, इसलिए असल ख़ताकार औरत है। ये बात भी तौरेत ही में है, क़ुरआन मजीद में नहीं। हवाला हाज़िर है। तर्जुमाः ''औरत ने ख़ुद देखा वह दरख़्त खाने के लिए अच्छा और आँखों को ख़ुशनुमा मालूम होता है और अक़्ल बख़शने के लिए ख़ूब है तो उसके फल में से लिया और खाया और अपने शौहर को भी दिया और उसने खाया। तब उन दोनों की आँखें खुल गईं और उनको मालूम हुआ कि वह नंगे हैं।'' (सफ़रे पैदाइश, बाबः 3, आयातः 6-7 किताबे मुक़द्दस बैंगलौर)

ख़ुदावन्दे ख़ुदा और आदम के दरमियान बातचीत तौरेत में कुछ इस तरह दर्ज है। तर्जुमाः ''क्या तू ने इस दरख़्त का फल खया जिसकी बाबत मैंने तुझे हुक्म दिया था कि उसे न खाना। आदम ने कहा जिस औरत को तूने मेरे साथ किया था, उसने मुझे उस दरख़्त का फल दिया और मैंने खाया। जब ख़ुदावन्दे ख़ुदा औरत से पूछा कि तूने ये क्या किया। औरत ने कहा साँप ने मुझे बहकाया तो मैंने खाया। ख़ुदावन्दे ख़ुदा ने साँप से कहा इसलिए कि तू ने ये किया तो सब चौपायों और जानवरों में मलऊन हो गया। तू अपने पेट के बल चलेगा और अपनी उम्र भर खाक चाटेगा और मैं तेरे और औरत के दरमियान और तेरी नस्ल और औरत की नस्ल के दरमियान अदावत डालूँगा। वह तेरे सर को कुचलेगा और तू उसकी एड़ी पर काटेगा। फिर उस ने औरत से

कहाः मैं तेरे दर्दे हमल को बहुत बढ़ाऊँगा तू दर्द के साथ बच्चे जनेगी और तेरी रग़बत अपने शौहर की तरफ़ होगी और वह तुझ पर हुकूमत करेगा और आदम से उसने कहाँ चूँकि तूने अपनी बीवी की बात मानी, इसलिए ज़मीन तेरे सबब से लानती हुई। मशक़्क़त के साथ तू अपनी उम्र भर उसकी पैदावार खायेगा, वह तेरे लिए काँटे और ओटंगारे उगाएगी और तू खेत की सब्ज़ी खायेगा।''(सफ़रे पैदाइश, बाबः 3, आयातः 11-19)

(बशुक्रिया रोज़नामा राष्ट्रीय सहारा (उर्दू) 21 मई 2010ई०)

पर्दा और हज़रत फ़ातिमा सलामुल्लाहि अलैहा

दीने इस्लाम की एक अहम ज़रूरत का नाम पर्दा है। जानबूझ कर अगर कोई इसका इन्कार करे तो वह इस्लाम से ख़ारिज हो सकता है। पर्दा क़ला है क़ैद नहीं, इफ़्फ़त और पाकदामनी है पाबन्दी नहीं, इज़्ज़तो शराफ़त और मतानत है नीचता और ज़िल्लत नहीं, पर्दा ख़ुदावन्दे आलम का हुक्म और फ़ातिमतुज़्ज़हरास० की सीरत है लेहाज़ा दुश्मनों के प्रोपेगण्डे और उनकी शमातत का कोई असर नहीं।

मुसलमान ख़ातून के लिए तो पर्दा इज़्ज़त और बलन्दी की वजह है क्योंकि नबी-ए-अकरमस० की बेटी फ़ातिमतुज़्ज़हरास० को हिजाब और पर्दे से मुहब्बत थी। अगर मुसलमान ख़ातून सिद्दीक़-ए-कुबरा की सीरत का बग़ौर मुताला करे तो वह मग़रिबी तबलीग़ से मुतास्सिर होकर पर्दे को पाबन्दी और ज़िल्लत का सबब नहीं समझेगी बल्कि हिजाब को अपने लिए इज़्ज़त की निशानी समझते हुए दूसरी औरतों को भी बाहिजाब रहने की तलक़ीन करेगी और उनको बावक़ार ज़िन्दगी गुज़ारने का सलीक़ा सिखायेगी।

पर्दा बेहतरीन ज़ेवर

पैग़म्बरे अकरमस० ने अपनी बेटी से पूछाः ''औरत के लिए बेहतरीन चीज़ क्या है?'' तो आपने फ़रमायाः ''औरत के लिए सबसे अच्छी चीज़ये है कि वह किसी नामहरम मर्द को न देखे।''

ये जवाब सुनकर पैग़म्बरे अकरमस० को इतना प्यार आया कि आपने अपनी बेटी को सीने से लगा लिया और फ़रमायाः ''ज़ुर्रियतुन बअ्ज़ुहा मिम बाज़'' इस हदीस शरीफ़ में औरत के लिए बेहतरीन चीज़ ये बताई गई है कि वह नामहरम को न देखे। एक दूसरी रिवायत में हज़रत ज़हरा-ए-मर्ज़िया ने फ़रमाया कि औरत का कमाल ये है कि कोई मर्द उसकी ख़ुशबू भी महसूस न कर पाए लेहाज़ा नाबीना वाली मशहूर रिवायत में जब नबी-ए-अकरमस० ने इजाज़त तलब की और नाबीना की हमराही का तज़किरा किया तो गुज़िश्ता मेयार को अमली जामा पहनाते हुए फ़रमायाः ''अगर वह मुझे नहीं देख रहा है तो क्या हुआ मैं तो उसे देख लूँगी और वह मेरी ख़ुशबू महसूस कर लेगा।'' इस जवाब में रिसालत व नुबुव्वत के ऐसे मक़ासिद पोशीदा थे कि पैग़म्बरे अकरमस० ने फ़ौरन फ़रमायाः ''मैं गवाही देता हूँ कि तुम मेरे वजूद का एक हिस्सा हो''।

मक़सदे ख़िलक़त

तमाम मख़लूक़ात ख़ुसूसन इन्सान की ख़िलक़त का आख़िरी मक़सद ख़ुदावन्दे मुतआल का तक़र्रुब है। क़ुरआन मजीद में ख़िलक़त का मक़सद जो इबादत बयान किया गया है वह भी तक़र्रुबे ख़ुदाए मुतआल को बयान कर रहा है। जो इन्सान जिस क़दर ख़ुदा से मुक़र्रब होगा उतना ही महबूबे बारगाहे इलाही होगा। इस मक़सद तक रसाई कोई ऐसा काम नहीं है कि इन्सान रब्बानी दावे या चन्द अच्छे काम अन्जाम देकर उस दर्जे तक पहुँच जाए बल्कि उस दर्जे तक पहुँचने के लिए इन्सान को अपनी ज़िन्दगी का हर लम्हा ख़ुदा के लिए वक़्फ़ करना पड़ता है पैग़म्बरे अकरमस० ने इसी हक़ीक़त के पेशे नज़र अस्हाब से ये सवाल किया कि औरत किस वक़्त अपने ख़ुदा से सबसे ज़्यादा नज़दीक होती है। अस्हाब में से किसी के पास इसका जवाब नहीं था। हज़रत अलीअ० ये सूरते हाल देखकर हज़रत ज़हरास० के पास तशरीफ़ लाए और आपको सारी दास्तान सुना दी तो आपने फ़रमायाः ''जाइये और बाबा से कह दीजिए कि जब औरत अपने घर के गोशे में होती है तो उस वक़्त ख़ुदा से सब से ज़्यादा नज़दीक

होती है। जब हज़रत अली[अ०] ने जवाब दिया तो नबी अकरम[स०] ने फ़रमायाः या अली ये आपका जवाब नहीं है तो हज़रत अली[अ०] ने फ़रमायाः फ़ातिमा[स०] ने मुझे ये जवाब बताया है। ये सुनकर आपने फ़रमायाः ''सदक़्ता अन्ना फ़ातिमतु बज़अतु मिन्नी''।

इस हदीस के बहुत सारे मतलब फ़ायदेमन्द हैं मसलन जिस फ़न का माहिर हो उसी से उसका सवाल करना चाहिए औरत से मुताल्लिक़ सवाल को हज़रत अली[अ०] ने जुज़्वे रिसालत से दरयाफ़्त किया।

हज़रत अली[अ०] कभी भी सवाल के जवाब में पीछे नहीं रहे जो सवालात आपसे मरबूत थे उसे बिला फ़ासला हल किया और जो सवालात खुद से मरबूत नहीं थे उसे बिलवास्ता जुज़्वे रिसालत के ज़रिये हल किया।

औरत घर में रहकर मुश्किल से मुश्किल मसला हल कर सकती है हर वक़्त घर से बाहर निकलना ज़रूरी नहीं है बल्कि जिस क़दर अपने घर में रहे उतना ही अपनी ख़िलक़त के मक़सद और ख़ुदावन्दे आलम से नज़दीक रहती है। अलबत्ता अगर ज़रूरत हो तो कामिल हिजाब के साथ बाहर निकले जिस तरह खुतब-ए-फ़िदक के लिए हज़रत ज़हरा सलवातुल्लाहि अलैहा बाहर निकली थीं या नसारा-ए-नजरान के मुक़ाबले में सामने आईं थीं। सीरते फ़ातमी पर अमल करने वाली ख़वातीन को फ़क़त बाहर निकलना याद नहीं रहना चाहिए बल्कि बाहर निकलने का तर्ज़ और अन्दाज़ भी मद्देनज़र रहना चाहिए और वाक़ई ज़रूरत को भी पेशे नज़र रखना होगा। किरदारे फ़ातिमतुज़्ज़हरा[स०] में हिजाब और पर्दादारी के इतने बाकमाल अनासिर मौजूद हैं कि मुसलमान ख़ातून अगर सही से इसका मुताला करे तो वह किसी भी सियासी नारे के फ़रेब में आकर धोका नहीं खायेगी। अगर ख़वातीन फ़ातिमा ज़हरा[स०] की इस रिवायत का मुताला कर लें जिसमें पैग़म्बरे अकरम[स०] ने शबे मेराज की दास्तान सुनाते हुए औरतों के अज़ाब का तज़किरा किया है तो कोई ख़ातून भी बेपर्दगी का तसव्वुर नहीं करेगी। फ़क़त इन अज़ाबों में से एक अज़ाब बउनवान नमूना पेश किये देता हूँ कि जो औरत अपने बालों को नामहरम से नहीं छिपाती है क़यामत के दिन अपने बालों से लटकाई जायेगी और उसका दिमाग़ ख़ौल रहा होगा।

वाज़ेह रहे कि जो इन्सान मर्द हो या औरत अपने मक़सदे ख़िलक़त को फ़रामोश कर देगा और ख़ुदावन्दे आलम से बग़ावत का एलान करते हुए पर्दे को छोड़कर बदहिजाबी या बेपर्दगी को तरजीह देंगे और उसके लिए नये-नये बहाने तराशेंगे तो ऐसे इन्सानों के लिए ऐसा अज़ाब कोई ताज्जुब की बात नहीं है।

फ़ातिमा ज़हरा[स०] की ख़ुशहाली

जब पैग़म्बरे अकरम[स०] ने घर के कामों को तक़सीम करते हुए बाहर का काम हज़रत अली[अ०] के हवाले किया और घर के अन्दर का काम हज़रत फ़ातिमा ज़हरा[स०] के हवाले कर दिया, तो हज़रत ज़हरा मरज़िया[स०] ने फ़रमाया कि ख़ुदा के अलावा किसी को नहीं मालूम कि मैं इस तक़सीम से कितनी ख़ुश हूँ कि पैग़म्बर ने वह काम जो मर्दों से मख़सूस हैं जिसमें मर्दों से राब्ता होता है वह मेरे ज़िम्मे नहीं फ़रमाया।

मुरझाए हुए फूल की मुस्कुराहट

मुरसले आज़म की वफ़ात के बाद ज़हराए मर्ज़िया का चैन व सुकून ही ख़त्म हो गया। कभी आँसू बहाने पर पाबन्दी तो कभी घर पर आग और लकड़ी, कभी मोहसिन की शहादत का ग़म, तो कभी पस्ली टूटने का दर्द इन्हीं ग़मो अलम ने फ़ातिमा ज़हरा[स०] के गोश्त व पोस्त को पानी कर दिया जिस्म पर गोश्त का नाम निशान भी न था। आँसू और नाला व शेवन आपकी ज़िन्दगी के अटूट हिस्से बन चुके थे, गुले रिसालत की पत्तियाँ बिखर रही थीं और आहिस्ता-आहिस्ता इस गुल में पज़मुर्दगी के आसार नुमायाँ हो रहे थे। इस मौक़े पर हंसी क्या मुस्कुराहट का तसव्वुर भी नहीं किया जा सकता लेकिन तारीख़ लिखने वालों ने इस गुले रिसालत की मुस्कुराहट का तज़किरा कया है बाबा की वफ़ात के बाद ये सबसे पहली मुस्कुराहट थी। हुआ यूँ कि ज़िन्दगी के आख़िरी लम्हात में जब पहलू का दर्द और बाज़ू का

वरम शदीद होने लगा तो असमा से फ़रमायाः ''असमा मुझे ये बिल्कुल अच्छा नहीं लगता कि औरतों को मरने के बाद एक ऐसी चीज़ पर लिटाकर चादर डाल दी जाती है जिससे उनके बदन का हजम नुमायाँ होता है। ये सुनते ही असमा ने अर्ज़ कियाः बीबी हब्शा में हम ने एक ताबूत देखा है जिसके अन्दर मय्यत को रखा जाता है फिर असमा ने वह ताबूत बनाकर दिखाया तारीख़ कहती है कि ये देखकर फ़ातिमा ज़हरा[स०] के चेहरे पर मुस्कुराहट के आसार नुमायाँ हुए बाद रसूले खुदा[स०] सिद्दीक़-ए-कुबरा[स०] के चेहरे पर यही अव्वल व आख़िर मुस्कुराहट थी जिसे तारीख़ ने अपने सीने पर महफ़ूज़ किया। मुस्कुराते हुए असमा से फ़रमायाः ''(ऐ असमा!) मेरे लिए भी ऐसा ही ताबूत बनाना, मेरे जनाज़े का पर्दा करना खुदा तुम्हें जहन्नम की आग से पर्दे में रखे (महफ़ूज़ रखे)।

सिद्दीक़-ए-कुबरा की शहादत के बाद आपको वसिय्यत के मुताबिक़ ऐसे ही ताबूत में रखा गया और तारीख़े इस्लाम में सबसे पहली बार ताबूत आप ही के लिए इस्तेमाल हुआ। जब किसी ने मासूम से पूछा कि सबसे पहले ताबूत किसके लिए बनाया गया तो आपने फ़रमाया फ़ातिमा बिन्ते रसूल[स०] के लिए।

बिन्ते रसूले खुदा[स०] की शहादत के जांसोज़ और रूह फ़रसा मौक़े पर हम सबको मिलकर इस बात का अहद करना चाहिए कि अगर अब तक कोताहियों के नतीजे में हमारी माएं, बहनें और बेटियाँ बेपर्दा थीं तो आज के बाद वह कभी बेपर्दा नहीं रहेंगी और तमाम ख़वातीन को भी पक्का इरादा करना चाहिए कि बिन्ते रसूल[स०] की ख़ुशी के लिए हम ख़ुद भी बाहिजाब रहेंगे और दूसरी ख़वातीन को भी पर्दे के फ़ायदे बताकर उन्हें बाहिजाब रहने की तलक़ीन करेंगे। **(जारी)**

बक़िया....... इस्लाम दीने अमल है

बस इतना कहूँगा कि अब ज़ुलजनाह की पुश्त ख़ाली हो चुकी थी। अब राकिबे दोशे रसूल[स०] ज़मीन के ऊपर था। इसके बाद न कहूँगा कि रुकू क्योंकर हुआ? क़्याम किस आलम में हुआ? बस सजदे का ज़िक्र और इसी पर मजलिस ख़त्म। यक़नन अली[अ०] का सजदा भी यादगार था। 19 रमज़ान की सुब्ह को जिसका गवाह बाद में तुलू होने वाला सूरज था और हुसैन[अ०] का ये आख़िरी सजदा है 10 मुहर्रम की अस्र का जिसका गवाह ग़ुरूब की तरफ़ मायल होता हुआ सूरज है। मगर मैं ख़ुद बारगाहे अमीरुलमोमिनीन में अर्ज़ करूँगा कि या अली[अ०] यक़ीनन आपकी भी नमाज़ और सजदे यादगार हैं मगर आपको सजदे से सर उठाने का मौक़ा मिला। लेकिन हुसैन[अ०] ने तो बस सर सजदे में दिया, वह उसके बाद बलन्द हुआ तो ज़ालिमों के हाथ से नोके नेज़ा पर। **(12 नवम्बर 1977, 11 बजे दिन फ़ज़ाबाद)**

हफ़्तावार ''वाएज़'' लखनऊ के जल्द ही मेम्बर बनिये

क़ाएदे मिल्लत मौलाना सै० कल्बे जवाद नक़वी साहब की सरपरस्ती और असीफ़ जायसी की इदारत में क़ौमी व मज़हबी अख़बार ''वाएज़'' जल्द ही वसीअ पैमाने पर शाया होने जा रहा है इन्शाअल्लाह ये हफ़्तरोज़ा ''हिन्दुस्तानी शिया इन्साइक्लोपीडिया'' की अहम दस्तावेज़ का काम करेगा। मोमिनीन से गुज़ारिश है कि 150/- रुपये मनीआर्डर के ज़रिये जल्द ही भेज कर मेम्बर बनें।

नूरे हिदायत फ़ाउण्डेशन

इमामबाड़ा ग़ुफ़रानमआब, मौलाना कल्बे हुसैन रोड, चौक, लखनऊ

फोनः 0522-2252230 **मोबाइलः 09335276180**

मुख्य समाचार

मस्जिदे अक़्सा की आज़ादी के लिए आलमी मुहिम

मस्जिदे अक़्सा में आगज़नी के वाक़िए को 41 साल हो चुके हैं, इस अन्दोहनाक वाक़िए की याद में अल-क़ुद्स आलमी तनज़ीम ने फ़िलिस्तीन के लिए काम करने वाली मुख़्तलिफ़ यूनियन और कुवैत में फ़िलिस्तीनी ख़ैराती कमेटी की मदद से एक आलमी मुहिम चलाने की तैयारियाँ मुकम्मल कर ली हैं। 'उठो अक़्सा ख़तरे में है' के उनवान से ये मुहिम 19 जुलाई 2010 से 9 सितम्बर 2010 तक जारी रहेगी। मुहिम के इन्तेज़ामकारों के मुताबिक़ इस जिद्दोजोहद का मक़सद अरब और इस्लामी दुनिया को मस्जिदे अक़्सा पर सहयूनी जारेहियत के ख़तरे से आगाह करना ओर ख़तरों में घिरी मस्जिदे अक़्सा के ख़िलाफ़ इस्राईली इरादों को नाकाम बनाने में हिस्सा लेने पर तैयार करना है। उन्हें ये बावर कराना मक़सूद है कि अरब और इस्लामी दुनिया की ग़ैर मामूली ख़ामोशी की वजह से मस्जिद को ख़तरे बढ़ते जा रहे हैं। मुहिम के मुन्तज़िमीन की जानिब से जारी किए जाने वाले बयान में कहा गया है कि ये मुहिम पिछली तमाम मुहिमों से अलग होगी क्योंकि ये एक ऐसे वक़्त में शुरु की जा रही है जब सहयूनी दुश्मनों की जानिब से अल-क़ुद्स पर यहूदियों के क़ब्ज़े की मज़मूम कारवाइयाँ उरूज पर पहुँच चुकी हैं। वक़्त गुज़रने के साथ-साथ क़ाबिज़ इस्राईल अपने फ़ायदों के लिए अल-क़ुद्स को उसकी दीनी, क़ौमी और सक़ाफ़ती पहचान से महरूम करता जा रहा है।

बयान में कहा गया है कि मुहिम का हदफ क़ौम के हर तबक़े को मस्जिदे अक़्सा के लिए कुछ करने के लिए तैयार करना है। चुनानचे इस मुहिम के ज़रिए अरब और इस्लामी दुनिया के आवाम के दिलों में फ़िलिस्तीन और मस्जिदे अक़्सा के लिए मौजूद हमदर्दी के जज़्बात को अमली इक़दाम में तबदील करने की पूरी कोशिश की जाएगी। बयान में मुहिम के तहत मुख़तलिफ़ नौइयत की सरगर्मियों की तफ़सीलात से आगाह किया गया इन सरगर्मियों में आलमे अरब में एक ही वक़्त में एक प्रेस कान्फ्रेंस का इन्एक़ाद किया जाएगा, इस कान्फ्रेंस का मरकज़ी हेड-क्वार्टर लेबनान में होगा। और इसी तरह एक रिपोर्ट की इशाअत के साथ दुनिया भर से मस्जिद अक़्सा की तरफ रैलियाँ निकाली जाएंगी, मुख़तलिफ़ मुमालिक से शुरु होने वाली ये रैलियाँ मक़बूज़ा फ़िलिस्तीन की सरहद पर इख़्तेताम पज़ीर होंगी।

इराक़ में पाँच मिलियन बेवाओं की ज़िन्दगी अजीरन

इराक़ पर अमरीका की जानिब से लादी गई जंग से पैदा होने वाली बदअम्नी में लाखों बच्चे यतीम और बड़ी तादाद में औरतें बेवगी का शिकार हुई हैं। एक अन्दाज़े के मुताबिक़ इस जंग के दौरान दस लाख इराक़ी औरतें बेवा हुईं जबकि चालीस लाख बच्चे यतीम हो चुके हैं। इतनी बड़ी तादाद में बेवा औरतों और यतीम बच्चों की मौजूदगी से समाज पर एक इज़ाफ़ी इक़्तेसादी बोझ है जिसकी वजह से ग़रीबी की शरह में इज़ाफ़ा हो रहा है। हुकूमत ने बेवा औरतों के लिए जो गुज़ारा एलाउंस मुक़र्रर किया है वह इतना कम है कि बढ़ती हुई महंगाई की वजह से उसमें दो वक़्त की रोटी पूरी करना मुश्किल होता जा रहा है। अपनी गुज़र औक़ात के लिए बेवा ख़वातीन सिलाई कढ़ाई के कोर्सेज़ कर रही हैं ताकि वह इज़्ज़त के साथ अपने बच्चों का पेट पाल सकें।

औरतों के लिए इराक़ी राष्ट्रपति की सलाहकार सलमा जाबू का कहना है कि मरकज़ी शूमारयाती डिवीज़न की तरफ़ से जुटाई गई गिनती के मुताबिक़ इस वक़्त मुल्क में तक़रीबन दस लाख इराक़ी औरतें बेवा और चालीस लाख बच्चे यतीम हो चुके हैं। इतनी बड़ी तादाद में समाज के अनदर बेवाओं की मौजूदगी से समाजी और मआशी मसाएल सामने आ रहे हैं। जंग की वजह से मुल्क की मईशत पहले ही ख़राब है और ऐसे में बेवगान की इतनी बड़ी तादाद का समाज में मौजूदगी एक बड़ा चैलेन्ज है। याद रहे कि इराक़ की आबादी तीस मिलियन लोगों पर मुशतमिल है।

ईरान के पहले जौहरी प्लान्ट का इफ़्तेताह सितम्बर में

ईरान के जौहरी तवानाई कमीशन के सरबराह अली अक्बर सालेह ने कहा है कि ईरान के पहले जौहरी तवानाई प्लान्ट का इफ़्तेताह इस साल सितम्बर में कर दिया जाएगा। ईरानी ज़राए इब्लाग़ को इण्टरव्यु देते हुए ईरानी जौहरी तवानाई कमीशन के सरबराह ने कहा कि 37 साल बार ईरान के पहले जौहरी तवानाई प्लान्ट के होने वाले इफ़्तेताह की तैयारियाँ मुकम्मल कर ली हैं और उसका इफ़्तेताह सितम्बर में कर दिया जाएगा जबकि प्लान्ट में गर्म पानी का भी कामयाब तजुरबा किया जा चुका है। एक सवाल के जवाब में उन्होंने कहा कि ईरान जौहरी प्रोग्राम की राह में बहुत आगे निकल चुका है जहाँ से वापसी नामुमकिन है। वाज़ेह रहे कि जौहरी तवानाई का ये प्लान्ट ईरानी शहर बरशेरक में है और इसकी बुनियाद 1994 में रूस की जानिब से रखी गई थी।

रौज़-ए-इमाम मूसा काज़िम[अ०] की तरफ़ जाने वाले ज़ायरीन पर

बम धमाका

उत्तरी बग़दाद में शिया ज़ाएरीन पर बम धमाके से 35 लोग हलाक और सौ से ज़्यादा ज़ख़्मी हो गए। तफ़सीलात के मुताबिक़ सुन्नी अक्सरियत वाले इलाक़े महल्ले आज़मिया में एक ख़ुदकश बम्बाज़ ने ज़ायरीन के क़ाफ़ले पर उस वक़्त हमला किया जब हज़ारों शिया जाएरीन मुसलमानों के सातवें इमाम, इमाम मूसा काज़िम अलैहिस्सलाम के यौमे शहादत की तक़रीबात में शिरकत के लिए वहाँ जमा थे और इस सिलसिले में इराक़ी हुक्काम ने पहले ही इन्तेहाई इन्तेज़ामात किये थे इस वाक़िए में 30 अफ़राद जाँ बहक़ हुए हैं जबकि 5 लोग बग़दाद के पश्चिमी हिस्से में भी बम हमले में हलाक हुए हैं। इन हमलों से पहले इराक़ी फ़ौज के मेजर जनरल अहमदुस्सादी का कहना था कि उन्हें शिया ज़ाएरीन पर हमलों का डर है इराक़ के साबिक़ राष्ट्रपति सद्दाम की हुकूमत ने इमाम मूसा काज़िम के यौमे शहादत की तक़रीब पर पाबन्दी लगा रखी थी जबकि उसकी हूकूमत के बाद अब इमाम मूसा काज़िम की शहादत के दिन की तक़रीब हर साल बाक़ायदा होती है और उसमें हज़ारों लोग शिरकत करते हैं। हमलों के बावजूद कई ज़ायरीन का कहना है कि वह इन वाक़िआत से नहीं डरेंगे और अपनी मज़हबी रुसूमात जारी रखेंगे। ये हमले ऐसे वक़्त हुए हैं जब अमरीका अगले महीने के आख़िर तक इराक़ से अपनी तमाम फ़ौजें वापस बुलाने की तैयारी कर रहा है। शिया अक्सरियती इलाक़े काज़िमिया में जहाँ इमाम मूसा काज़िम का मज़ार है, गाड़ियों के आने-जाने पर पाबन्दी लगा दी गई है और ज़ायरीन के गुज़रने वाले रास्तों पर पुलिस फ़ोर्स तैनात की गई है। इलाक़े में हुक्काम ने हमलों के ख़तरे को देखते हुए मोटर साइकिलों और साइकिलों पर भी पाबन्दी लगा दी है।

आयतुल्लाहिल उज़मा सै० मुहम्मद हुसैन फ़ज़्लुल्लाह की

रिहलत

मशहूर शिया आलिमे दीन आयतुल्लाह सै० मुहम्मद हुसैन फ़ज़्लुल्लाह का 4 जुलाई 2010 मुताबिक़ 21 रजब बरोज़ इतवार को बैरूत के अस्पताल में इन्तेक़ाल हो गया आपको बैरूत के जुनूब में सुपुर्दे ख़ाक कर दिया गया। नमाज़े जनाज़ा मे मरहूम के घर वाले, मुख़्तलिफ़ सियासी जमाअतों के क़ाएदीन, अरब और इस्लामी मुल्कों की मशहूर शख़सियतें, तमाम मकातिबे फ़िक्र और ज़िन्दगी के मुख़्तलिफ़ शोबों से ताल्लुक़ रखने वाले लोगों ने शिरकत की। आयतुल्लाह सै० मुहम्मद हुसैन फ़ज़्लुल्लाह के इन्तेक़ाल के हादसे पर लेबनान में सरकारी तौर पर आम छुट्टी कर दी गई थी। आयतुल्लाह सै० मुहम्मद हुसैन फ़ज़्लुल्लाह की नमाज़े जनाज़ा से पहले शहरियों की बड़ी तादाद बैरूत के जुनूब में वाक़े नवाही इलाक़े ''हाररह हरीक'' में उनके घर के सामने जमा होना शुरु हो गई थी, जिसके बाद मक़ामी वक़्त के मुताबिक़ डेढ़ बजे नमाज़े जनाज़ा के लिए मैय्यत को मस्जिदे इमामैन अल-हसनैन में ले जाया गया। तदफ़ीन के वक़्त निहायत रिक़्क़त आमेज़ माहौल था। मैय्यत को मस्जिद के पीछे के दरवाज़े से मस्जिद में ले जाया गया, जहाँ नमाज़े जनाज़ा की अदायगी के बाद उन्हें मस्जिद ही के सहन में सुपुर्दे ख़ाक कर दिया गया। तदफ़ीन के फ़रायज़ उनके क़रीबी रिश्तेदारों ने अदा किए इस दौरान ज़राए इबलाग़ के नुमाइन्दों को अन्दर आने की इजाज़त नहीं दी गई। मैय्यत को घर से मस्जिदे इमामैन तक ले जाते हुए मुख़्तलिफ़ मक़ामात पर कुछ देर के लिए रोका गया, ''बिअ्रुल अब्द'' के मक़ाम पर उनका जनाज़ा चन्द लम्हों के लिए रोका गया। याद रहे कि इस मक़ाम पर 1985 में आयतुल्ला मुहम्मद हुसैन फ़ज़्लुल्लाह पर एक क़ातिलाना हमला किया गया था जिसमें वह महफ़ूज़ रहे थे मगर हमले में दूसरे 80 लोग हलाक हो गए थे। तदफ़ीन के दौरान मरहूम का अमामा भी उनकी मैय्यत के साथ रख दिया गया। शदीद गर्मी का असर कम करने के लिए बाज़ मक़ामी लोगों ने जनाज़े के शुरका पर पानी भी फेंका। सख़्त गर्मी और तेज़ लू के बावजूद लोगों की एक बड़ी भीड़ मरहूम के आख़िरी दीदार के लिए उमड़ आई थी। तदफ़ीन से पहले फ़िज़ा ''लब्बैक या हुसैन'' और ''ला-इला-ह इल लल्लाह अस-सैय्यद हबीबुल्लाह'' के नारों से गूँज रही थी। नमाज़ जनाज़ा के मौक़े पर सियाह लिबास में ख़वातीन की बड़ी तादाद ने भी शिरकत की, शुरका ने सियाह परचम भी उठा रखे थे और मैय्यत के रास्ते में आने वाले मुख़्तलिफ़ रास्तों की दीवारों पर मरहूम के इन्तेक़ाल पर ताज़ियती कलेमात और ''इन्ना लिल्लाहि वइन्ना इलैहि राजिऊन'' और ''अस्तौदुउकुमुल्लाहु'' की इबारात लिखी गई थीं। मुमताज़ शिया आलिमे दीन की वफ़ात पर लेबनान की फ़िज़ा सोगवार रही जबकि इस मौक़े पर तमाम सरकारी दफ़ातिर, तिजारती, कारोबारी मराकिज़ और तालीमी इदारे भी बन्द रहे। वाज़ेह रहे कि आयतुल्लाह सै० मुहम्मद हुसैन फ़ज़्लुल्लाह मशरिक़े वुस्ता में अमरीकी मदाख़लत के सख़्त मुख़ालिफ़ थे, और उन्होंने नाइन इलेवन के हादसे की भी सख़्त अलफ़ाज़ में मज़म्म्त करते हुए मरने वालों से हमदर्दी का इज़हार किया था। इदारा इस हादसे पर पूरी दुनियाए शीईयत ख़ासकर इमामे ज़माना[अ०] को ताज़ियत पेश करता है और मोमिनीन से फ़ातेहाख़्वानी की दरख़्वास्त करता है।